sr. 7 Novel हिंदी.
2002-03 sr. 8.

लोगों की उन्हें कोई चिंता नहीं है। इन स्थितियों में आम आदमी पिस रहा है। कवि का कहना है कि हमें 'चीखना होगा/विरोध में तनी मुट्ठियों की भाषा में/यह समय/चुप रह जाने का नहीं है।' 'इनसे मिलिए', 'उनके पाँव चरण' आदि कविताओं में भी भ्रष्ट राजनीति के असली चेहरे उभरते हैं।

इतना सब होने पर भी कवि का स्वर आस्था का है। कवि को लगता है कि 'अभी ख़त्म नहीं हुआ है सब कुछ' उसे विश्वास है कि जल्दी ही समय बदलेगा, स्थितियों में सुधार आयेगा और हम बेहतर जीवन जी सकेंगे।

1. सरकते हुए दिनः शैल कुमारी; अनुभव प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली-2; संस्करण 2001; मूल्य 80.00 रुपये।

2. यह चुप रहने का समय नहीं: हरजिन्दर सिंह सेठी; आकलन, मुंबई; संस्करण 2000; मूल्य 60.00 रुपये।

6/15, अशोक नगर, नयी दिल्ली-110018

डा. चंद्रलेखा

प्रेम-संबंध के नए समीकरण

जीवन का पूर्वार्द्ध हो या उत्तरार्द्ध, मनुष्य के जीवन में 'प्यार' का महत्त्व बना रहता है। प्यार के इतने शेड्स हैं कि शरीर द्वारा महसूस होते-होते, वह मन-मस्तिष्क पर चढ़कर बोलता है और वह बोलना ही शायद किसी रचनाकार की रचना-प्रक्रिया है। हर अनुभूति रचना-प्रक्रिया नहीं बन पाती, पर जो परिपक्व हो पाती है, वह अनुभूति मन-मस्तिष्क में रासायनिक क्रिया करके अंकुर के रूप में प्रस्फुटित भी हो जाती है। अतः अनुभव जितना तीव्र और परिपक्व होगा, अनुभूति भी उतनी ही तीव्र और परिपक्व रूप में प्रस्फुटित होगी।

मुझे लगता है कि डा. वीरेन्द्र सक्सेना के नए कथा-काव्य 'ठोस प्रीति की प्रतीति' में भी अनुभूति की तीव्रता और परिपक्वता ही उसकी रचना-प्रक्रिया का मूल स्रोत है, तभी तो वह हमें ठोस रूप में 'प्रीति' की प्रतीति करा पाता है, और हम 'प्रीति' या 'प्यार' के केवल वायवीय स्वरूप से साक्षात्कार नहीं करते। यहाँ काव्य का नायक 'सुचिंतक' अपनी 'सुप्रिया' की खोज जीवन के उत्तरार्द्ध में कर पाता है, अतः मुझे लगता है कि इसके पीछे भी कोई 'ठोस' कारण ही है। मेरे विचार में वह 'ठोस कारण' शायद यह है कि जीवन के पूर्वार्द्ध में नायक-नायिका अपने-अपने वैवाहिक जीवन के कर्तव्यों और दायित्वों में इतने फँसे रहते हैं कि उनका ध्यान निजी सुख की ओर कम ही जा पाता है। जीवन के पूर्वार्द्ध में वैवाहिक जीवन के आरंभिक वर्षों में नर-नारी का ध्यान सेक्स में उलझकर प्रजनन में फँसा रह जाता है और इसके बाद बच्चों पर केंद्रित हो जाता है। किंतु जीवन के उत्तरार्द्ध में जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते जाते हैं, उनके अपने-अपने केंद्र बनते जाते हैं (यह स्वाभाविक भी है), तब नर-नारी के केंद्र भी बदल जाते हैं या बदल सकते हैं। शायद इसीलिए कुछ विद्वानों का मानना भी है कि मनुष्य के परिपक्व जीवन की शुरुआत 40 वर्षों के बाद ही हो पाती है, क्योंकि इससे पहले वैवाहिक जीवन में बच्चों को बड़ा करने, उनके प्रति जिम्मेदारी निभाने में अपने बारे में सोचने का समय ही नहीं होता। और इसीलिए बहुत सारे नर-नारी विवाह के बाद भी 'कुँवारे' रह जाते हैं और सामाजिक दबावों के कारण किसी अन्य से भी प्यार का आदान-प्रदान नहीं कर पाते।

ऐसे में किया क्या जाए? क्या विवाह समाप्त करके पुनः एक प्रेम-विवाह किया जाए? लेकिन इस प्रक्रिया का भी कोई अंत तो नहीं है। कई साहित्यकारों ने या फिल्म वालों ने एक के बाद एक प्रेम-विवाह किए, किंतु क्या वे अपने प्रेम में संतुष्ट और सफल रह पाए? यहीं मुझे कवि केदार नाथ सिंह की पंक्तियाँ याद आ रही हैं-'कविता यही करती है/एक जोखिम भरा काम/सब कुछ कहने के बाद भी/छोड़ जाती है एक खाली पत्रा।'

अस्तु, जिस कलाकार को 'खाली पत्रे' का एहसास होगा, वह उसे भरने का जोखिम भी उठाएगा और जीवन के नए समीकरण भी खोजेगा। मेरे विचार में डा. वीरेन्द्र सक्सेना द्वारा जीवन के लिए एक नए समीकरण की खोज ही उनके 'सुचिंतक' का वक्तव्य बना और फिर उसने उसके अनुसार कुछ प्रयोग और प्रयास भी किए। इन प्रयोगों और प्रयासों के अनुसार ही 'ठोस प्रीति की प्रतीति' के चार चरणों या खंडों का नामकरण भी किया जा सका, क्रमशः 'पहचान', 'प्रक्रिया', 'प्रतीति' तथा 'प्रत्युत्तर' के रूप में। इन चारों खंडों में जो दिल पर दस्तक देने वाली अनुभूतियाँ हैं, उनमें एक 'अक्षर' या ध्वनि 'सु' है, जो बहुत ही प्रतीकात्मक है। इससे इस पूरे कथा-काव्य में डा. सक्सेना की नर-नारी संबंधों को 'सुसंबंध' बनाने की चाह भी दृष्टिगोचर होती है, क्योंकि वे कभी किसी भी संबंध को तोड़ने की बात नहीं करते, बल्कि जोड़ने के सुझाव देते हैं-'हमने अपनाया मैथुन के बिना मंथन/और सर्वांगीण प्रेमानुभवों को महसूस कर/हम बने रह सके अधिकाधिक प्रेममय/इससे अपने दांपत्य के हित में भी हम/हो सके बेहद उदार और प्रेमिल।" (पृ. 64)

यों प्रत्येक प्रेम-संबंध अपनी सीमा-रेखा तो स्वयं तय करता है, पर उसमें एक बात सुनिश्चित है कि यदि उसमें कोई सहभोगी 'कुचिंतक' या 'कुलक्षणा' नहीं है तो उनमें 'ग्लानि' या 'गिल्ट' भी नहीं होगी। इसमें सबसे प्रमुख संकेत यह भी है कि विवाहेतर संबंधों का परिणाम पति-पत्नी के परिवार को तोड़ना नहीं, बल्कि

उसे परिपूर्ण करना भी हो सकता है-'ए बेटर हाफ ऐज वेल ऐज द बेस्ट हाफ' (पृ. 80)। अतः जहाँ तक मैं इस कथा-काव्य को समझ पाइ हूँ, मुझे लगता है कि रचनाकार वैवाहिक जीवन की कमियों को विवाहेतर प्रेम की खूबियों से मिलाकर 'चालीस चाँद' लगाना चाहता है और कदाचित रचनाकार या उसके 'सुचिंतक' का 'मिलनफल' भी यही है। अतः जीवन के उत्तरार्द्ध की उसकी 'सुलक्षणा सुप्रिया' उसकी प्रेरक है, पूरक है, और 'उत्तरा' भी!

दूसरी ओर डा. कामिनी बाली के शब्दों में-'उसमें नायिका मात्र 'प्रेमिका' के रूप में चित्रित नहीं है। वह अपने नायक के प्रति प्रेम का प्रकटीकरण भी करती है और उसके प्रेम का प्रत्युत्तर भी देती है।' (फ्लैप-मैटर) इस तरह यहाँ स्त्री मात्र निष्क्रिय प्रेमिका नहीं, बल्कि अपने प्रेमी की तरह ही सक्रिय प्रेमी के रूप में सामने आती है और सहभागी या 'सहभोगी' बनकर अपनी भूमिका का निर्वाह करती है-'अनुगामी नहीं, अग्रगामी नहीं/सहगामी बन खोजना चाहती हूँ/एक नया सहसंबंध-समीकरण/जो टिका हो 'सहभोग' पर।' (पृ.112)

'प्रत्युत्तर' की सार्थकता इसमें भी है कि 'द्रौपदी के तो पाँच पति थे सर्वसमर्थ/फिर भी मन की बात कहनी पड़ी उसे/विपत्ति के समय अपने सखा कृष्ण से। मैंने भी एक समर्थ पति के होते हुए/रखा है तुम्हारे प्रति सखा-भाव/फिर उससे भी आगे प्रेम-भाव/जिसे तुमने भी अंगीकार किया अंतर्मन से/इसमें नहीं कुछ भी तो अनुचित।' (पृ.124) मैं समझती हूँ आज के युग में इसी 'सखा-भाव' को अग्रता-क्रम देना होगा, जहाँ पति-परिवार के प्रति निष्ठा में कमी न हो, धोखा न हो, लेकिन कोई 'अनोखा प्रेम' भी अपनी जगह कायम रहे। हो सकता है तथाकथित शुचितावादियों को ऐसे संबंध पर आपत्ति हो, पर जहाँ विवाह-संस्था पर ही प्रश्नचिह्न लग गए हों, वहाँ उसको स्वीकार करते हुए उसके पूरक के बारे में तो सोचना ही होगा।

यों सामाजिक बदलाव रातोंरात नहीं हो जाते-उनकी एक लंबी सामाजिक प्रक्रिया होती है। पर कम से कम 'ठोस प्रीति की प्रतीति' जैसा कथा-काव्य हर सजग पाठक को, चाहे वह नर हो या नारी, अपने बारे में, चारों ओर बदलते परिवेश-परिप्रेक्ष्य के बारे में सोचने को प्रेरित कर सकता है। यही संभवतः इस कथा-काव्य का निहित उद्देश्य-संदेश है और यही इसके रचनाकार की सफलता भी!

4, शशि सदन, प्रथम तल
मुंडवेल, वास्को-ड-गामा
गोवा-403802